भूमण्डल के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण की शिक्षा

सारांश

आज यह बात पूरे भूमण्डल के परिप्रेक्ष्य में बहुत ही सार्थक हैं कि पर्यावरण विषय को प्रत्येक स्तर पर सभी प्रारूपों में शामिल किया जाये और हम अपने मन, वाणी और कर्मो से उसे सार्थक करने में एकरूपता लायें।

मनुष्य सुविधाओं में इतना अधिक वशीभूत हो गया कि हाल में विश्व स्तर पर पर्यावरण की सुरक्षा से संबन्धित विश्व स्तरीय सम्मेलन जो कि डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में सम्पन्न हुआ उसमें अमेरिका ने परोक्ष रूप से पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाली तमाम सारी वह चीजें जो व्यक्ति की विलासिता/सुविधाओं से जुड़ी है उनमें किसी प्रकार की कटौती न करने का संकेत दिया। इतना ही नहीं बल्कि दूसरे अन्य विकासशील देशों को यह नसीहत दी कि वह अपने देशों में इसे नियंत्रित करें और इसके लिए जो भी आर्थिक मदद की आवश्यकता होगी उसमें अमेरिका सहयोग करेगा। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अमेरिका पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले देशों की श्रेणी में पहले (1) नम्बर पर है।

विकास की कीमत पर्यावरण को चुकानी पड़ेगी ऐसा संकेत पग–पग पर मिल रहा हैं तो फिर ऐसे विकास का क्या मतलब हैं। सड़क चौड़ी करनी है तो दरख्त (पेड़) कटते हैं और उसके स्थान पर लगाये जाते हैं पौधे। नीम, पीपल, जामुन, इमली, बरगद एवं आम के पेड़ों का स्थान सदाबहार गुलमुहर, गोल्डमोहर या अन्य (सजावटी पेड़) ले रहे हैं। क्या इनसे पर्यावरण की रक्षा हो पायेगी।

मुख्य शब्द : पर्यावरण असंतुलन , पर्यावरण शिक्षा

गुन्जन चन्द्रा
विभागाध्यक्ष
सेन्ट्रल वूमेन्स कालेज आफ एजूकेशन, व अतिथी प्रवक्ता
बी0 एड0
बी0 बी0 ए0 यू0 लखनऊ

प्रस्तावना

इससे ज्वलन्त विषय आज के परिप्रेक्ष्य में कोई दूसरा हो ही नहीं सकता है जिसके असन्तुलन का खामियाजा पूरे भूमण्डल को भुगतना पड़ रहा है और आने वाले समय में और भयंकर परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा यदि हम अभी से चेते नहीं और इस पर्यावरण के असंतुलन के लिए हम सभी जिम्मेदार है और कोई दूसरा नहीं। यह ऐसा विषय है जिसकी भयावहता से 5 साल का बच्चा और उसके दादा, परदादा तक परिचित है पर उपाय (इसके नियंत्रण) के नाम पर सब एक दूसरे का मुँह देख रहे है बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हम लोग ढीठ हो गये है कि परिणाम जानते हुए भी उसी तरफ बढ़ते चले जा रहे है जिधर खाई है।

छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर ने इस दिशा मे समय रहते बहुत ही सार्थक पहल की है और पर्यावरण विषय को स्नातक स्तर पर अनिवार्य विषय में रखकर इस दिशा में अपने गंभीर होने का संकेत दिया है। इसी तरह की पहल अन्य शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों को भी करने की जरूरत है बल्कि इसे अधिक से अधिक चर्चा, सेमिनार, गोष्ठी एवं कार्यशाला के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाने की आवश्यकता है। इस लेख के माध्यम से इस मंच से भारत सरकार और सभी राज्य सरकारों से मेरा यह अनुरोध है कि प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा के सभी प्रारूपों में पर्यावरण विषय को अनिवार्य शिक्षा के रूप में शामिल करें।

मैं बहुत छोटी सी बात का उल्लेख करना चाहूँगी मेरा बेटा जो कि 10 वर्ष का हैं मेरे साथ जब भी बाजार जाता है तो कोई भी सामान दुकानदार द्वारा पॉलीथीन में देने पर उसका विरोध करता है और हमें विवश करता है कि पॉलीथीन में कोई सामान न लें और धीरे–2 उसका असर मेरे ऊपर भी होने लगा है। कम से कम बेटे के साथ रहने पर हम पॉलीथीन नहीं लेते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उसे भी शायद यह शिक्षा अपने विद्यालय (School) से मिली है और इसका इतना असर है जब कि हम लोग जो कि अपने आपको अधिक बुद्धिमान समझते हैं, परन्तु पॉलीथीन जैसी चीज को न नहीं कह पा रहे है।

मनुष्य जहाँ पहुँच जा रहा है पर्यावरण को खतरा उत्पन्न हो जा रहा हैं और गंन्दगी का साम्राज्य स्थापित कर दे रहा है। लेह, लद्दाख एवं सियाचिन जैसी बर्फीली पहाड़ियों पर भी टिन और पॉलीथीन का ढेर लगने लगा है।

वन सम्पदा की क्षति होने से सीधा प्रभाव वन्य जीवों पर पड़ा है उनके रहने की जगह धीरे–2 कम होती जा रही है जिसके कारण वन के निवासी चौपाये शहरों की आबादी की रूख करने लगे हैं जिससे दो पॉव वाले (मनुष्य) को भी खतरा पैदा हो गया है।

शोध के द्वारा यह निष्कर्ष सामने आया है कि सबसे ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन वातानुकूलन (Air Condition) संयत्रों से हो रहा है। मुम्बई इस देश में सबसे आगे है जहाँ पर पर्यावरण सेवी संस्थाओं ने गले में पहने जाने वाल टाई को एक आधार माना है कि यदि लोग टाई पहनना बन्द करे दे तो Air Condition की आवश्यकता को कम किया जा सकता हैं यह भी विचारणीय प्रश्न हैं।

दैनिक जागरण समाचार पत्र के 25 फरवरी 2010 के संम्पादकीय में प्रकाशित सराहनीय पहल जो कि वाराणसी में गंगा को प्रदूषण से बचाने के लिए साड़ी की डाई करने वाली यूनिटों को अन्यत्र स्थानान्तरित करने का है। जिससे गंगा को प्रदूषण से बचाया जा सके इसी तरह की पहल हर क्षेत्र में करने की आवश्यकता है। चाहे वह नदियाँ हो या वन सम्पदा जीव जन्तु, ध्वनि प्रदूषण एवं अन्य सभी प्रकार की पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाली गतिविधियाँ रोकनी होगी। ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ लड़ाई के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) के क्लाईमेट पैनल के भारत मूल के श्री राजेन्द्र पचौरी एवं अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अलगोर को शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है यह संकेत है पर्यावरण की सबसे बड़ी समस्या की ओर विश्व का ध्यान आकर्षित करने के लिये।

महान पर्यावरणविद जेफ गुडेल ने भविष्य वाणी की थी। चेतावनी दी थी कि पृथ्वी पर भारी जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप इस सदी में छः अरब लोग मारे जायेगें। फिर भी हम नहीं चेते।

पृथ्वी का दोहन लगातार हो रहा है जिसकी वजह से जो पृथ्वी और उसका वातावरण हमारे लिए वरदान था वही अभिशाप बनता जा रहा है। उदाहरण के लिए वन सम्पदा, खनिज एवं जल, संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बुतरस घाली ने कहा था कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा क्योंकि पृथ्वी की 25 प्रतिशत आबादी वाले क्षेत्रों में पानी (भूजल) का स्तर कम से कमतर होता जा रहा है।

पर्यावरण के असंतुलन से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ते जाने से ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र का जल स्तर बढ़ सकता है और ऐसे में समुद्र तट पर बसे शहरों जैसे लन्दन, टोकियो और मुम्बई का सफाया हो सकता है एवं जो भी द्वीप है उनकी जल समाधि हो सकती है।

पर्यावरण के असंतुलन के कारण जंगलों में आग भी लग रही है विगत वर्ष में फलोरिडा और कैरिबियन के जंगलों में लगी भयंकर आग इसके संकेत मात्र है।

आवश्यकता इस बात की है कि न केवल भारत देश वरन विश्व के सभी देश राजनैतिक एवं संकीर्ण विचारों को त्यागकर एक दीर्घकालीन नीति तैयार करें जिसमें पर्यावरण को कैसे संतुलित रखा जाये और इसके लिए किन–किन स्तरों पर क्या–2 उपाय किये जायें जिसमें मानव मात्र का ही नहीं अपितु पृथ्वी पर सभी जीव जन्तुओं का भी कल्याण हो सके अन्यथा जिस प्रकार विभिन्न प्रकार के जन्तुओं और पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त हो गयी है वैसे ही मनुष्य भी विलुप्त हो जायेगें। और इन सभी प्रश्नों का हल पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सकता है तो आओं हम सब मिलकर संकल्प लें कि पर्यावरण शिक्षा को प्रत्येक स्तर पर लागू करने हेतु हम हर संभव प्रयास करेंगें और तब तक नही रूकेंगे जब तक इसमें सफलता न मिल जाये।

संदर्भ

1. अदम्य साहस– भारत रत्न डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम–पृष्ठ संख्या 18 से 20।
2. Environmental Education- G.R Sawhney Vikas Books Ltd. New Delhi
3. दैनिक जागरण– 25 फरवरी 2010 (समाचार पत्र) – सम्पादकीय प्रकाशन
4. पर्यावरण शिक्षा– पदमा श्रीवास्तव, विनोद, पुस्तक मन्दिर, आगरा